न्यायशास्त्र के अध्ययन से हानि

-प्रो. वीरसागर जैन

न्यायशास्त्र के अध्ययन से होनेवाले लाभों की तो हमने अनेक बार चर्चा की है, किन्तु प्रश्न है कि क्या न्यायशास्त्र के अध्ययन से कुछ हानि भी होती है ?

उत्तर- हाँ, लाभ होता है तो हानि भी होगी ही, दोनों अविनाभावी हैं | न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे अनेक महादोषों की हानि होती है | यथा-

1. **अन्धविश्वास-** बिना ज्ञान के होनेवाले श्रद्धान/विश्वास को अन्धश्रद्धा या अन्धविश्वास कहते हैं | प्राय: लोग दूसरों की देखादेखी ही बातों पर भरोसा कर लेते हैं, उसकी स्वयं परीक्षा नहीं करते, अत: उन्हें सम्यग्ज्ञान नहीं होता | सम्यग्ज्ञान करने के लिए स्वयं परीक्षा करना अनिवार्य है, जो हमें न्यायशास्त्र सिखाता है | अत: न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे अन्धविश्वास नामक महादोष की हानि होती है | इसी अन्धविश्वास को शास्त्रीय भाषा में मिथ्यात्व कहते हैं, जो अनंत संसार का कारण होता है | न्यायशास्त्र के अध्ययन से जीव के इस मिथ्यात्व नामक महादोष की हानि हो जाती है और उसका संसार अत्यल्प रह जाता है |
2. **अन्धानुकरण-** अंधविश्वास की भांति अंधानुकरण भी एक महादोष है | जब हम स्वयं ज्ञान किये बिना ऐसे ही देखादेखी अन्य लोगों का अनुकरण करने लगते हैं तो उसे अन्धानुकरण कहते हैं | न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारी यह गन्दी आदत भी नष्ट हो जाती है | अन्धानुकरण को हम शास्त्रीय भाषा में मिथ्याचारित्र कह सकते हैं | सम्यग्दर्शन-ज्ञान के बिना होनेवाला चारित्र अन्धानुकरण ही है | लोकमूढ़ता आदि अनेक दोषों का भी मूल कारण अन्धानुकरण ही है | इस प्रकार हम देखते हैं कि न्यायशास्त्र के अध्ययन से मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों की हानि हो जाती है | लोक में भी ऐसा व्यक्ति विवेकी नहीं कहलाता, पिछलग्गू कहलाता है | अन्धानुकरण के अनेक दृष्टान्त हैं, जैसे कि- अधिकांश कुत्ते चोर को नहीं देखते, पर दूसरे कुत्तों को भौंकता देखकर भौंकने लगते हैं | (पर्दे के पीछे गधा, राजा नंगा है |)
3. **पक्षपात-** यह बहुत ही खतरनाक दोष है | इसके कारण व्यक्ति के मन में अपने-पराये आदि का पक्ष बना रहता है और वह सत्य को नहीं देख पाता है | जैसे कि माँ को अपना पुत्र मोटा हो तब भी दुबला या पतला ही नजर आता है | अथवा एक ही कार्य अपनी बेटी करे तो अच्छा लगता है और बहू करे तो बुरा लगता है | इसीप्रकार और भी सदा ही पक्षपात करता हुआ जीव सत्य को नहीं पहचान पाता | न्यायशास्त्र के अध्ययन से इस पक्षपात नामक महादोष की भी हानि हो जाती है, क्योंकि उसका पाठक व्यक्तिवादी नहीं रहता, वस्तुवादी बन जाता है | कहा भी है कि- 'पक्षपातो न मे वीरे न द्वेष: कपिलादिषु, युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्य: परिग्रह: |' (-लोकतत्त्वनिर्णय, 1/38)
4. **पूर्वाग्रह-** पूर्वाग्रह भी एक बहुत खतरनाक दोष है | यह भी सत्य को समझने में महा बाधक बनता है | जब हम किसी व्यक्ति या विषय के सम्बन्ध में पूर्व से ही कोई मान्यता बनाकर बैठ जाते हैं तो वह पूर्वाग्रह है | न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे इस पूर्वाग्रह नामक महादोष की भी हानि हो जाती है | पूर्वाग्रह का एक दृष्टान्त इस प्रकार है कि एक बनिया था | उसकी दुकान पर एक आदमी आठ आने की अजवायन खरीदने आया | बनिया ने अजवायन तौलकर उसकी अठन्नी को भी भूल से अजवायन के साथ पुडिया में

उसे दे दिया | ग्राहक घर जाकर देखता है तो समझ जाता है कि आज तो बनिया ठगा गया, परन्तु पूर्वाग्रह के कारण फिर कहता है कि नहीं, बनिया ठगा नहीं सकता, वह तो हमेशा ठगता ही है | उसने आज मुझे अठन्नी के बराबर अजवायन कम दे दी है | इसी प्रकार और भी अनेक दृष्टान्त पूर्वाग्रह के बताये जा सकते हैं | पूर्वाग्रह को ही जिद जैसा होने के कारण आग्रह और बुरा होने के दुराग्रह भी कहते हैं | आग्रही, दुराग्रही या पूर्वाग्रही व्यक्ति किसी बात को ठीक से सुन भी नहीं सकते, फिर उस पर विचार करके सत्य समझने की बात तो दूर ही रह जाती है | मैं अनेक बार मीटिंग आदि में भी देखता हूँ कि किसी व्यक्ति के बारे कोई व्यक्ति पहले से ही कुछ आग्रह बनाकर रखता है कि वह तो गुस्सा करता है या अधिक बोलता है या केवल पैसा देखता है, इत्यादि तो उसके विचारों से लाभान्वित नहीं हो पाते हैं |

5. **भावुकता**- भावुकता एक बहुत ही खतरनाक दोष है | बहुत-से लोग इसके चक्कर में भी सत्यासत्य का ज्ञान नहीं कर पाते हैं | इतना ही नहीं, वे बुरी तरह लुट-पिट जाते हैं | कई बार तो वे भावनाओं में बहकर अपना पूरा ही जीवन बरबाद कर देते हैं | किसी के भी शिष्य बन जाते हैं और उसमें बिलकुल ही अन्धे हो जाते हैं | पूछो तो कहते हैं कि अरे, वे बार-बार रोकर कह रहे हैं तो हम क्या करें, हमें तो फिर मानना ही है, इत्यादि | भावुकता को लोक में भी इमोशनल ब्लेकमेल करना कहकर बुरा माना जाता है | भावुक व्यक्ति वैज्ञानिक चेतना से सम्पन्न नहीं बन जाता है | न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे इस भावुकता नामक महादोष की भी हानि हो जाती है |
6. **उत्तेजना-** अधिकांश लोग जरा-सी भी अपने प्रतिकूल बात कहीं कुछ सुनते-देखते हैं तो तुरन्त उत्तेजित हो जाते हैं, अपना आपा भूलकर क्रोधित होने लगते हैं, सही-गलत का विचार नहीं करते | किन्तु न्यायशास्त्र को जानने वाला व्यक्ति पहले सही-गलत की परीक्षा करता है, इसलिए उत्तेजित नहीं होता | यदि कोई बात अपने प्रतिकूल भी हो तो वह जैसी है वैसी स्वीकार करता है | इस प्रकार न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे उत्तेजना नामक महादोष की भी हानि हो जाती है | जैसे कि ट्रेन समय पर चली गई और वह स्टेशन नहीं पहुंच सका तो भी वह समझेगा कि इसमें मेरा ही दोष था |
7. **स्वार्थ-** स्वार्थ भी हमें सत्य के दर्शन नहीं होने देता | यदि कोई व्यक्ति किसी व्यवस्था को चलाने की बात रखेगा तो स्वार्थी व्यक्ति उसमें भी अपना मतलब ही देखता रहेगा और उसका सही उद्देश्य आदि नहीं समझेगा | न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे इस स्वार्थ नामक महादोष की भी हानि हो जाती है |
8. **दम्भ-** इसे मद, अभिमान या अहंकार भी कहते हैं | यह भी हमें सत्य के दर्शन नहीं होने देता | अथवा अनेक बार ऐसा भी होता है कि बात समझ में आ रही होती है, पर मद या अहंकार उसे स्वीकार नहीं करने देता | न्यायशास्त्र के अध्ययन से इस मद या दम्भ नामक दोष की भी हानि हो जाती है |
9. **लोभ-** लोभ भी जीव को अन्धा बनाता है | यह लोभ अनेक प्रकार का होता है | धन के लोभी को केवल वही बात सही लगती है, जिसमें उसे धनलाभ हो | यश के लोभी को वही बात सही लगती है, जिसमें उसे यश का लाभ हो | इसी प्रकार अन्य भी अनेक हैं | न्यायशास्त्र के अध्ययन से इस लोभ नामक दोष की भी हानि हो जाती है |
10. **कपट-** कपट भी जीव को बहुत अशान्त बनाता है, अत: वह सत्य को नहीं देख पाता, किन्तु न्यायशास्त्र के अध्येता व्यक्ति को कपट एकदम निरर्थक एवं अनर्थक समझ में आ जाता है, अत: उसके कपट नामक महादोष की भी हानि हो जाती है |

11. **अधीरता-** अधीर व्यक्ति बहुत जल्दबाजी करता है, उसमें धैर्य नहीं होता, वह तुरन्त ही किसी बात पर रुष्ट या तुष्ट हो जाता है अथवा उसे करने ही लग जाता है, उसका पहले विचार नहीं करता है, इससे वह सत्य नहीं समझ पाता और पश्चात्ताप का शिकार भी हो जाता है, जैसा कि कहा है- बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय; काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय | किन्तु न्यायशास्त्र का अध्येता व्यक्ति ऐसा नहीं होता, वह हर बात को शान्ति से, धैर्य से समझता है और उसके बाद ही उसका अनुपालन करता है | इस प्रकार न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे अधीरता नामक दोष की भी हानि हो जाती है |
12. **आकुलता-** ऊपर सिद्ध किया जा चुका है कि न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों की हानि हो जाती है तो अन्ततोगत्वा सर्व आकुलता भी सहज ही समाप्त हो जाती है | अत: हम कह सकते हैं कि न्याशास्त्र के अध्ययन से हमारी सम्पूर्ण आकुलता-व्याकुलता की हमेशा के लिए हानि हो जाती है |

इस प्रकार यहाँ हमने देखा कि न्यायशास्त्र के अध्ययन से हमारे अनेक महादोषों की हानि भी होती है | अनेक ही नहीं, सर्व महादोषों की हानि होती है | यद्यपि यहाँ गिनाते समय इनमें कुछ और भी दोष गिनाये जा सकते हैं और उन सबको पृथक्-पृथक् कुछ विस्तार से सोदाहरण स्पष्ट भी किया जा सकता है, पर आशा है कि आप सब मेरा आशय इतने से ही समझ जाएँगे |